अध्याय 6 उद्धार

मैं उसके छोटे से घर में बैठा हुआ था जब ९५ वर्ष की अमेलिया ने मुझे बताया कि वह कैसे यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता के रूप में स्वीकार कर सकी।

कई वर्ष पहले वह लेटिन अमेरिका के एक चर्च के दरवाजे पर खड़ी थी और प्रवेश करने से घबरा रही थी किन्तु उत्सुकता से प्रचारक को यह कहते सुना "यीशु तुम्हारा उद्धारकर्त्ता है। वह तुम्हें तुम्हारे पापों से बचाएगा। आवश्यकता पड़ने पर यीशु को पुकारें।"

उस दिन वह पहाड़ी पर वापस चली गई और जैसे ही अपने कमरे में प्रवेश किया तो सरसराहट की आवाज सुनाई दी। अचानक, इससे पहले कि वह उससे बचने के लिये भागे एक बड़े बोआ कन्सट्रिक्टर सर्प ने उसे लपेट लिया। अपने सामने वह उसके सिर को देख सकती थी जिसने उसे मरोड़ना शुरु किया। उसने प्रचारक के शब्दों को याद किया और साहस के साथ चिल्लाकर कहा "यीशु मुझे बचा! यीशु मुझे बचा! सर्प ने अपनी कुण्डली ढ़ीली कर दी और उसके शरीर को छोड़कर नीचे गिर गया और फिसलते हुए कमरे से बाहर चला गया।

कहने की आवश्यकता नहीं कि उस दिन अमेलिया ने प्रभु को न सिर्फ शारीरिक बचाव के लिये धन्यवाद दिया किन्तु आत्मिक रूप से बचाने के लिए भी उससे प्रार्थना की।

वही प्रभु यीशु जिसने अमेलिया को बचाया वह आपको भी बचा सकता है। आइए अब इस बहुमूल्य उद्धार के विषय में अध्ययन करें और देखें कि इसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे.....

उद्धार की परिभाषा।

उद्धार के विषय प्रारम्भिक शिक्षा।

उद्धार का परिणाम।

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप .....

- उद्धार के अर्थ की व्याख्या कर सकें।
- उद्धार के सिद्धान्तों को अपने जीवन में प्रयोग कर सकें।
- उद्धार के प्रत्याशित परिणामों के उजाले में अपने जीवन की जांच कर सकें।

उद्धार की परिभाषा

उद्देश्य १. बाइबल के अनुसार उद्धार की परिभाषा मालूम करना।

एक दिन एक विश्वविद्यालय के एक जवान ने मुझसे कहा, "उद्धार पाने और स्वर्ग जाने के कई मार्ग हैं। स्वर्ग में पहुंचने के लिये विश्वास योग्यता ही साधन है। जैसा हम विश्वास करें उसमें स्थिर रहने से हम स्वर्ग जा सकते हैं।"

बाइबल स्पष्ट रूप से बताती है कि पाप से स्वतंत्रता केवल "यीशु" के द्वारा मिलती है। प्रकाशित वाक्य १:५ कहता है, "वह (यीशु मसीह) हमसे प्रेम करता है और अपनी मृत्यु के द्वारा उसने हमें हमारे पापों से मुक्त किया है।"

प्रेरित ४:१२ कहता है : "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।

अतः उद्धार की परिभाषा में हम कह सकते हैं कि यह पापों की क्षमा है, जो यीशु मसीह के पवित्र लोहू के द्वारा मिलती है जो हमारे पापों के प्रायश्चित में बहाया गया, यदि हम उस पर विश्वास करें।

किसे इस उद्धार की आवश्यकता है? जैसे कि हमने पहले अध्ययन किया है कि सभी ने पाप किया है और अनन्तकाल की मृत्यु अथवा सबके लिये परमेश्वर से अलगाव की सजा मिली हुई है। यहेजकेल १८:४ कहता है "जो मनुष्य पाप करता है वह मरेगा" और रोमियों ३:२३ में हम पढ़ते हैं कि "सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है।" सारी मानव जाति को पापों से छुटकारा और यीशु मसीह के द्वारा पापों की क्षमा की आवश्यकता है।

जो आपको करना है

१. यीशु के द्वारा उद्धार मिलता है, इसे दर्शाने वाले अक्षरों के चारों ओर वृत्त खींच दें।

अ. लूका १९:१०

ब. रोमियों ५:८

स. रोमियों १:१६

ड. गलतियों १:४

२. अच्छी तरह वाक्य पूर्ण करने वाले उत्तर का चुनाव करें। उद्धार का अर्थ

अ. जो कुछ हम विश्वास करते हैं उसमें विश्वासयोग्य होना है।

ब. यीशु मसीह के द्वारा पापों से छुटकारा प्राप्त करना है।

३. सही कथन के सामने के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींच दें।

अ. जो दूसरों को चोट पहुंचाते हैं केवल उन्हें ही उद्धार की आवश्यकता है।

ब. परमेश्वर के पास तथा स्वर्ग जाने के कई रास्ते हैं।

स. भले लोग उद्धार प्राप्त कर लेंगे।

उद्धार की प्रारम्भिक शिक्षा

उद्देश्य २. उद्धार के आधार को दर्शाने वाले कथनों को जानना।

यीशु के जी उठने के कुछ वर्ष बाद, "प्रेरितों के काम" का लेखक जेल के एक दरोगा की कहानी लिखता है जो उस बड़े भूकम्प से घबरा गया

था, जब पौलुस और सीलास जेल में बन्द थे, जो यीशु के चेले थे। दरोगा यह सोच कर भयभीत था कि कैदी भाग गये परन्तु पौलूस और सीलास ने उसे ढाढ़स बंधाया कि कोई कैदी नहीं भागा। दरोगा ने परमेश्वर के इस आश्चर्य-कर्म को देखकर पूछा कि मैं उद्धार पाने के लिए क्या करूं? उन विश्वासियों का सीधा-सादा उत्तर था — "प्रभु यीशु पर विश्वास कर, तो तू उद्धार पाएगा।" यह प्रेरितों १६:३१ में मिलता है।

अतः उद्धार प्राप्त करने के लिये पहला कदम अवश्य है कि प्रभु यीशु पर विश्वास किया जाए।

हमें किस तरह का विश्वास करना चाहिए? बाइबल में इसका भी उत्तर है। यह बताती है कि हमें उसको अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता स्वीकार करना चाहिए और हमें स्वर्ग पहुंचने के लिए उस पर निर्भर होना चाहिए।

> परन्तु यह इसलिए लिखा गया है कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ (यूहन्ना २०:३१)।

जब हम यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण करते हैं तो हमें पाप से भी मुंह मोड़ना है। हमें पश्चात्ताप करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि हमें यीशु के नाम से क्षमा प्रदान करे और शुद्ध करे। यदि हम ऐसा करने के लिए उससे प्रार्थना करते हैं तो हमें भरोसा भी करना चाहिए कि वह क्षमा करता तथा शुद्ध करता है। पहला यूहन्ना १:९ याद रखें "यदि हम अपने पापों को परमेश्वर के सामने मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है।

इस प्रकार से यीशु को प्रभु और उद्धारकर्त्ता स्वीकार करना केवल बातचीत के द्वारा किया जाता है। जैसे आप किसी मित्र से बातें करते हैं। यदि आपने ऐसा कदम कभी नहीं उठाया तो आप परमेश्वर से केवल कह दें कि उसके द्वारा दी गई क्षमा को आप स्वीकार करना चाहते हैं। शायद आप इसे अपने ही शब्दों में कुछ इस तरह कह सकते हैं :

''प्रेमी पिता,

मैं मानता हूं कि मैं एक पापी हूँ।

मुझे अपने पापों के लिये दुख है तुझ से क्षमा मांगता हूँ।

मुझे शुद्ध कर और सभी गलत कार्यों से बचा।

मैं तेरे पुत्र यीशु का बलिदान स्वीकार करता हूं जो क्रूस पर मेरे लिये मरा।

अब मैं उसे अपना प्रभु और उद्धारकर्त्ता स्वीकार करता हूं।

तुझे धन्यवाद देता हूँ आमीन।''

जब आप ईमानदारी से प्रार्थना कर लेते हैं तो आप भरोसा कर सकते हैं कि आपके पाप क्षमा कर दिए गए हैं। आप उसकी प्रशंसा कर सकते और उसको धन्यवाद दे सकते हैं कि आप उसके बच्चे हैं।

जो आपको करना है

इन अभ्यासों के लिए ऐसे उत्तर चुनें जो वाक्य को अच्छी तरह पूरा करता हो। अपने चुनाव के सामने के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींच दें।

४. रोमियों १:१६ पढ़ें। यह कहता है कि उद्धार ऐसे प्रत्येक के लिए है जो

अ. नियमों के आधार पर जीवन बिताता है।

ब. विश्वास करता है।

स. धनी है।

५. प्रेरितों के कार्य १६:३१ और यूहन्ना २०:३१ के अनुसार उद्धार के लिए हमारा विश्वास होना चाहिए :

अ. प्रभु यीशु पर।

ब. चेलों पर जो संत थे।

स. अपने चर्च के रीतिरिवाजों पर।

उद्धार का परिणाम

उद्देश्य ३. उद्धार के पांच परिणाम को जानना।

जब आप उद्धार को स्वीकार करते हैं तो क्या होता है? एक स्पष्ट आत्मिक बदलाहट एवं परिवर्तन हो जाता है। कभी-कभी इसे हृदय का परिवर्तन कहते हैं। दूसरा कुरिन्थियों ७:१० कहता है :

> "क्योंकि परमेश्वर भक्ति का शोक ऐसा पश्चात्ताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है।"

दूसरा कुरिन्थियों ५:१७ बताता है कि "यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है पुरानी बातें बीत गई है, देखो वे सब नई हो गई।"

यह परिवर्तन कई तरह से देखा जा सकता है। कभी-कभी एक व्यक्ति के विचार जीवन के प्रति उदासी से खुशी में बदल जाते हैं या शायद वह अब किसी व्यक्ति से प्यार करता है जिससे पहले न कर सकता हो।

शारीरिक परिवर्तन भी हो सकता है। जो शराब पीने की आदत से जकड़े हुए थे वह मुक्त हो जाते हैं। कोई व्यक्ति जो अब उस पर विश्वास करता है उसके जीवन में आवश्यक परिवर्तन लाने में प्रभु शक्तिशाली है।

याशु मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार करने का अर्थ यह है कि परमेश्वर के परिवार में जन्म लेना। यही यीशु के कहने का अर्थ था जब उसने यूहन्ना ३:३ में कहा कि हमारा "नया जन्म" लेना अवश्य है।

> यूहन्ना १:१२-१३ कहती है :
> जितनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया। वे न लोहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए।

बाइबल गोद लेने के बारे में भी कहती है जो कि इसी प्रकार के सम्बन्ध को दर्शाती है। गोद लेने के द्वारा हम परमेश्वर के परिवार में स्वीकार कर लिए जाते हैं। परमेश्वर अपनी सारी विरासत का अधिकार जो कि परमेश्वर के बेटे-बेटियों का है, हमें देकर अपनी सन्तान बना लेता है।

> आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं। और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जबकि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं (रोमियों ८:१६-१७)।

"परमेश्वर के परिवार में होना एक विशेष बात है। इसलिए आप मसीहियों में एक दूसरे को "भाई" या "बहन" कहते हुए सुनते हैं। इसे कहने का अर्थ यह हुआ कि "कि हम एक ही परिवार के हैं।

क्या हमें अपने उद्धार का निश्चय हो सकता है? एक दिन एक जवान स्त्री ने प्रार्थना करने का निवेदन किया। उसने मुझे बताया कि जब उसने मसीह को अपनाया और उद्धारकर्ता स्वीकार किया तो उसे अद्भुत और आनन्द से भरा हुआ अनुभव प्राप्त हुआ। अब उसे ऐसा महसूस नहीं हो रहा था और जानना चाहती थी कि वह क्यों "अपना उद्धार खो चुकी" है हमें मालूम हैं कि हम अपनी अनुभूतियों के द्वारा उद्धार नहीं पाते किन्तु परमेश्वर के वचन के आधार पर प्राप्त करते हैं।

यदि हमने बाइबल की शर्तों को जो उद्धार के बारे में दी गई हैं पूरा किया है तो हमें विश्वास करना चाहिए कि हमारा उद्धार हो चुका है चाहे हमारी अनुभूतियां कैसी भी क्यों न हों। पवित्र आत्मा भी हमारे हृदयों में इस बात का आश्वासन दे सकता है। हमें मसीह में अपने भाई बहनों के द्वारा भी आश्वासन प्राप्त हो सकता है जैसे मेरे मित्र ने भी किया था जिस दिन वह मेरे घर में आई थी।

हम जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंचे हैं क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं" (१ यूहन्ना ३:१४)।

शायद आपने मसीहियों को पापमोचन और पवित्रीकरण शब्दों का उपयोग करते हुए सुना होगा। इसका अर्थ क्या है?

पापमोचन का अर्थ है पाप से मुक्त हो जाना अर्थात् धर्मी बन.जाना। यह उद्धार का परिणाम है । परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा कर देता है, सारे दोष दूर कर देता है और कहता है कि अब हम धर्मी बन गए — जैसे हमने कभी कोई पाप किया ही न हो। रोमियों ५:१ हमें बताता है "सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें" पापमोचन का अर्थ परमेश्वर की दृष्टि में सच्चा ठहरना है।

पवित्रीकरण का अर्थ पवित्र बनना है अर्थात् पापों से शुद्ध एवं परमेश्वर के लिए समर्पित होना है।

> शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे-पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें (१ थिस्सलुनीकियों ५:२३)।

परमेश्वर चाहता है कि सभी मसीहियों का पवित्रीकरण हो अर्थात् पवित्र हो जाएं। "क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो।" (१ थिस्सलुनीकियों ४:३) "सबसे मेल मिलाप रखने और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा (इब्रानियों १२:१४)।

एक और बात है जिसे यीशु के क्रूस पर मौत के परिणाम के अन्तर्गत जानना जरूरी है। यह दैवीय चंगाई है यीशु के क्रूस के द्वारा प्राप्त फायदों में यह भी एक है।

जब संध्या हुई तब वह उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्टात्माएं थी और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया (मत्ती ८:१६-१७)।

"वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं" (यशायाह ५३:५) दैवीय चंगाई परमेश्वर की दैवीय सामर्थ है जो मनुष्य की देह को स्वास्थ्य प्रदान करती है। याकूब ५:१४-१५ हमें बताता है कि हम इस चंगाई पर अधिकार कैसे कर सकते हैं।

> यदि तुम में कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उस के लिये प्रार्थना करें और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उस को उठा कर खड़ा करेगा और यदि उसने पाप भी किए हों तो उनकी भी क्षमा हो जाएगी।

जो आपको करना है

६. इस प्रश्न में सही उत्तरों के सामने के अक्षरों में वृत्त खींचें।

उद्धार के परिणाम निम्न में से कौन-कौन से हैं?

अ. परिवर्तन

ब. गोद लेना या "नया जन्म" होना

स. पापमोचन

ड. पवित्रीकरण

इ. दैवीय चंगाई की प्राप्ति

७. बाईं ओर के शब्दों को पढ़ो। प्रत्येक के सामने दाईं ओर दी गई परिभाषा की संख्या लिखो जो मेल खाती हो।

...अ.	परिवर्तन	१.	पवित्र बन जाना।
...ब.	पवित्रीकरण	२.	दैवीय साधनों से स्वास्थ्य प्राप्त होना।
...स.	पापमोचन	३.	पूर्ण परिवर्तन बदलाहट आ जाना।
...ड.	दैवीय चंगाई	४.	परमेश्वर के परिवार का एक भाग बन जाना।
...इ.	गोद लेना	५.	धर्मी बन जाना।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. प्रत्येक पर वृत्त खींच दें क्योंकि प्रत्येक पद बताता है कि उद्धार यीशु मसीह के द्वारा प्राप्त होता है।

५. अ. प्रभु यीशु

२. ब. यीशु मसीह के द्वारा पापों से छुटकारा।

६. प्रत्येक में वृत्त खींच दें क्योंकि वे सभी उद्धार के परिणाम हैं।

३. किसी भी चुनाव में वृत्त न खींचे। उनमें से कोई भी सही नहीं है।

७. अ. ३) पूर्ण परिवर्तन आ जाना।
   ब. १) पवित्र बन जाना।
   स. ५) धर्मी बन जाना।
   ड. २) दैवीय साधनों से स्वास्थ्य प्राप्त होना।
   इ. ४) परमेश्वर के परिवार का भाग बन जाना।

४. ब. विश्वास करता है।